Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

हिंदी यात्रा वृत्तांतों में जनजीवन और संस्कृति: पर्वतीय अंचल के विशेष संदर्भ में

प्रिया तिवारी (शोधार्थिनी)
डॉ.यतींद्र सिंह कुशवाहा (शोध निर्देशक)
हिन्दी विभाग, डी.ए-वी. कॉलेज,कानपुर
(संबद्ध- छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर)

समाज की आत्मा उसकी संस्कृति में बसती है एवं यात्रा वृत्त उसको समझने का सबसे सशक्त माध्यम होता है। यात्रा मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति का परिचायक है। प्राचीन काल से ही मनुष्य घुम्मकड़ी प्रवृत्ति का रहा है। प्राचीन काल में मानव फल-फूल, कंदमूल, शिकार आदि की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहता था। मनुष्य की इस घुम्मकड़ी प्रवृत्ति से ही नवीन मानव का विकास हुआ। मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करता था इस यात्रा से संस्कृति एवं कलाओं का भी आदान-प्रदान हुआ, मनुष्य अपने साथ अपनी संस्कृति एवं कलाओं को भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित करता था। घुम्मकड़ी प्रवृत्ति ही मानव सभ्यता के क्रमिक विकास की जननी है। हिंदी साहित्य में यात्रावृत्त विधा का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। भारत की भौगोलिक विविधताओं ने विशेष कर पर्वतीय अंचल ने विचारको, लेखकों एवं सैलानियों को अपनी तरफ आकर्षित किया है । पर्वतीय अंचल का सौंदर्य सैलानियों को जितना आकृष्ट करता है उतना ही वहां के निवासियों का जीवन संघर्षमय है। यात्रा साहित्य के द्वारा यात्रावृत्तांतकार पर्वतीय अंचल की संस्कृति से तो हमें रूबरू करवाता ही है वहां की परिस्थितियों,जनजीवन,कठिनाइयों, लोक परंपराओं आदि का भी अत्यंत जीवंतता के साथ वर्णन किया है। पर्वतीय जनजीवन की आम समस्या है वहां का मौसम(भूस्खलन बादलों का फटना आदि)इन सब का चित्रण हमें हिंदी यात्रा साहित्य में पर्वतीय अंचल पर लिखे गए यात्रा साहित्य में बखूबी मिलता है।

पर्वतीय अंचल में प्रकृति को ही भगवान माना जाता है, पर्वतीय संस्कृति में लोकगीतों एवं लोक नृत्य का विशेष महत्व है, फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक त्योहारों एवं विवाह उत्सव में लोक नृत्य एवं लोकगीतों का विशेष महत्व होता है।

लोकगीत के माध्यम से पर्वतीय अंचल के दुःख सुख को भी व्यक्त किया जाता है। हिंदी यात्रा साहित्य के माध्यम से लेखक हमें पर्वतीय अंचल की यात्रा ही नहीं करवाता वरन वहां के अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्धि, लोक संस्कृति के साथ-साथ वहां के लोगों के संघर्ष से भी हमारा परिचय करवाता है कि किस प्रकार आज भी पर्वतीय अंचल में निवास करने वाले लोग समाज को प्रकृति से जोड़ने एवं सादगी पूर्ण जीवन जीने और मानवीय मूल्यों को बचाए रखने का संदेश देते हैं। पर्वतीय संस्कृति को आम जनता तक पहुंचाने में हिंदी यात्रा साहित्य एक

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

जीवंत एवं प्रमाणिक दस्तावेज है। पर्वतीय जनजीवन एवं संस्कृति का स्वरूप अंतर्विरोधों से भरा हुआ है, एक और जहां प्रकृति का अनुपम अलौकिक सौंदर्य मन को मोहित करने वाला होता है वही जीवन की बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवन के अनवरत संघर्ष है। पर्वतीय संस्कृति जीवंत उदाहरण है सीमित संसाधनों एवं विपरीत परिस्थितियों में सादगी के साथ जीवन जीने का। हिंदी यात्रा साहित्य में पर्वतीय क्षेत्रों में बढ़ रहे व्यवसायीकरण एवं रोजगार के अभाव में वहां के जनमानस के पलायन का भी वर्णन मिलता है।

यात्राएं मानव सभ्यता के विकास की धुरी है। लेखक अपनी यात्रा के अनुभवों को वैयक्तिक संवेदना,सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक चेतना के साथ लिपिबद्ध है तो लेखक की यात्रा यात्रा विधा का रूप ले लेती है। हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र से यात्रा विधा की शुरुआत हुई एवं वर्तमान में अत्यंत प्रौढ अवस्था में है। यात्रा वृत्त किसी स्थान विशेष के दृश्य का वर्णन मात्र नहीं होता वरन क्षेत्र विशेष के जनजीवन एवं संस्कृति के जीवन का परिचायक होता है जो स्थान विशेष के लोगों के रहन-सहन,खान -पान,त्यौहार ,परंपराओं एवं स्थान विशेष में निवास करने वाले लोगों के जीवन की समस्याओं से जनमानस को रूबरू करवाता है।यात्रावृ्त्त एक सशक्त विधा है पर्वतीय अंचल के जनजीवन एवं संस्कृति को जानने की।

इस शोध पत्र में अनिल यादव- वह भी कोई देश है महाराज, उमेश पंत- दूर दुर्गम दुरुस्त, सतीश जायसवाल -सूर्य का जलावतरण, रश्मि शर्मा -झारखंड से लद्दाख ,राहुल सांकृत्यायन- किन्नर देश में ,अजय सोडाणी -दर्रा दर्रा हिमालय, मधु कांकरिया -बादलों में बारूद, अजय सोडाणी -दरकते हिमालय पर दर बदर नामक यात्रा साहित्य के माध्यम से पर्वतीय अंचल के जनजीवन, समस्याओं एवं संस्कृति का वर्णन किया गया है।

उमेश पंत का यात्रावृत्तांत दूर दुर्गम दुरुस्त पर्वतीय अंचल के जनजीवन एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण दस्तावेज है, वे इस यात्रा वृत्तांत के माध्यम से वहां के खान-पान रहन-सहन लोक संस्कृति लोक कलाओं का वर्णन करते हैं वह बताते हैं शिलांग में लड़के के जन्म पर "का जर का थोह हो नाम एक कार्यक्रम किया जाता है और बच्चे के सामने एक धनुष और तीन तीर रखे जाते हैं। पहले तीर उसकी जमीन का घोतक माना जाता है, दूसरा उसके कुल का और तीसरा उस बच्चे का। ये तीर और धनुष उसकी मृत्यु के समय तक संभाल के रखे जाते हैं मरते वक्त आखिरी तीर को उसके साथ ही दफना दिया जाता है, जबकि दो तीरो को धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाकर आकाश में छोड़ दिया जाता है। माना जाता है कि यह तीर उसकी आत्मा के साथ स्वर्ग तक जाएंगे।"1 लेखक ने जनजातियों के लोक परंपराओं लोक जीवन एवं प्रकृति के प्रति पर्वतीय जनमानस की गहरी आस्था का वर्णन अपनी यात्रा साहित्य में किया है।यह पुस्तक पर्वतीय अंचल के बदलते परिदृश्य एवं वहां की अनूठी लोक संस्कृति को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

झारखंड से लद्दाख यात्रा वृतांत में रश्मि शर्मा लद्दाख की खूबसूरती एवं वहां की संस्कृति का वर्णन करती हुई लिखती हैं-" हम जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे थे प्रकृति अपनी अप्रतिम रूप में नजर आ रही थी। रेत, पानी और बर्फ का संगम एक साथ शायद ही कहीं मिले आपको। अब हर तरफ रेगिस्तान -ही-रेगिस्तान था। बालू के बीच झाड़ियां थीं। अब जो नदी हमारे साथ चल रही थी, उसका नाम श्योक है, जिसका अर्थ होता है रिवर आफ डेथ या दुख या मृतकों की नदी।"2 लेखिका इस यात्रा वृतांत में लद्दाख की पारंपरिक बौद्ध संस्कृति मठ त्यौहार एवं लोक जीवन का वर्णन अत्यंत सरलता से करती हैं। रश्मि शर्मा ने अपने यात्रा वृत्तांत के माध्यम से वहां के धार्मिक नृत्य का वर्णन करती हुई लिखती है-" दिस्कित गोम्पा में वर्ष में एक बार तुछोत के नाम से वार्षिक मेला आयोजित होता है। उस मौके पर मठ में निवास कर रहे लामा बुद्ध और बोधीसत्वों के मुखौटे पहनकर धार्मिक नृत्य करते हैं, जिसे 'छमस' कहते हैं।"3

सतीश जायसवाल- सूर्य का जलावतरण यात्रा वृत्तांत में "राजनीतिक विडंबनाओ को भी नजर अंदाज नहीं किया हैजो इन क्षेत्रों में अक्सर गंभीर रूप ले लेती हैं मसलन मणिपुर की वर्तमान समस्या। लेकिन लेखक का खास जोर उस सौंदर्य पर है जो यहां की प्रकृति और जन-जीवन में साक्षात होता है ;एक स्वप्निल सौंदर्य जिसे हर कोई अपनी आंखों से देखना चाहेगा।"4 पर्वतीय अंचल विविध संस्कृतियों का संगम है। लेखक ने इस यात्रा वृत्तांत में पर्वतीय रहन-सहन, खान-पान, रीति रिवाज,बोली एवं प्राकृतिक सौंदर्य का जीवंत वर्णन पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। नागालैंड की परंपराओं का वर्णन करते हुए में लिखते हैं "नागालैंड में लंबे समय तक नरमुंडों के शिकार की परंपरा रही है।नागा योद्धाओं के लिए यह उनके शौर्य का एक प्रतीक था। एक प्रथा भी। कोंयक उनके यहां की एक प्राचीन जनजाति है। इस जनजाति के योद्धाओं को विवाह के लिए किसी शत्रु कबीले या अपने प्रतिद्वंद्वी से युद्ध करके उसका नरमुंड प्रदर्शित करना होता था।"5

यात्रा साहित्य के माध्यम से हम पर्वतीय अंचल में व्याप्त ववसुधैव कुटुंबकम की भावना को सहज ही महसूस कर सकते हैं। कोई भी उत्सव या त्यौहार हो पूरा गांव एकजुट हो जाता है। यह सामूहिक रूप से कार्य करते हैं, जो इनकी एकजुटता का प्रतीक है। पर्वतीय अंचल में लोक संगीत एवं लोक नृत्य के बगैर वहां का जीवन अधूरा होता है। यात्रा वृत्तांत के माध्यम से हमें यहां के लोक -जीवन,लोक- संगीत, जीवन की विषम परिस्थितियों एवं वहां बढ़ रहे औद्योगीकरण का अत्यंत जीवंत दर्शन मिलता है। बादलों में बारूद यात्रा वृत्तांत में मधु कांकरिया लद्दाख के घरों एवं जनजीवन का वर्णन करती हुई लिखती है।" छोटे-छोटे घर जिनकी छतें यडपा पेड़ की लकड़ी से बनी हुई जिससे खून जमाने वाली ठंड में घर गर्म रह सके। जगह-जगह खेतों में, घरों के बाहर गोंचा (यहां की परंपरागत वेशभूषा) पहने घास सुखाती हुई लद्दाखी औरतें।"6 वह इस यात्रा वृत्तांत में बौद्ध संस्कृति की वर्तमान

स्थिति,सौंदर्य, राजनीतिक विषमता एवं जनजीवन की मार्मिक स्थिति का व्यापक वर्णन करती है।

अनिल यादव ने वह भी कोई देश है महाराज में पहाड़ों की सुंदरता से हटकर मणिपुर, मेघालय नागालैंड, शिलांग, चेरापूंजी आदि पर्वतीय अंचलों में आमजन की बुनियादी सुविधाओं के अभाव, दुर्गम रास्तों एवं रोजमर्रा की कठिनाइयों एवं राजनीतिक व्यवस्था की आपसी टकराव, को यात्रावृत्तांत के माध्यम से वर्णित किया है।असम की संस्कृति का वर्णन करते हुए वह लिखते हैं -"ज्यादातर असमिया हिंदू गांव किसी न किसी मठ से संबंध है और वहां के सामाजिक जीवन में नामघर की केंद्रीय भूमिका होती है। नामघर सीमेंट, लकड़ी या बांस के खंभों पर बना हुआ तीन तरफ से खुला बरामदे नुमा ढांचा होता है जहां लोग सामूहिक कीर्तन करते हैं।"7 अनिल यादव ने अपने यात्रावृत्तांत के माध्यम से पर्वतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं उनकी समाज में भूमिका का वर्णन भी बखूबी किया है।

राहुल सांकृत्यायन ने अपने यात्रा वृत्तांत में पर्वतीय समाज की संस्कृति, आंतरिक संरचना, प्राकृतिक सौंदर्य, भौगोलिक स्थिति एवं वहां निवास करने वाले निवासियों की समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने वहां के रहन-सहन,लोकगीत, लोक संस्कृति का भी वर्णन अपने यात्रा वृत्तांत में किया है। किन्नर देश में यात्रा वृत्तांत में राहुल सांकृत्यायन जी ने वहां की संस्कृति एवं उत्सव में पहनने वाले पारंपरिक परिधान, लोकगीत, लोक भाषा, पारंपरिक भोजन का अत्यंत जीवंत वर्णन प्रस्तुत किया है। स्त्रियों की पारंपरिक पोशाक का वर्णन करते हुए लिखते हैं-" स्त्रियां ऊर्ण सारी पहनी थी। हां ऊर्ण सारी को ऊनी साड़ी ना मान लीजिए, यह काफी लंबा- चौड़ा पतला कंबल होता है। जिसे स्त्रियां दाहिना कंधा खोले कांटे से इस प्रकार पहनती हैं कि सिर को छोड़कर सारा शरीर ढक जाता है। कोच्चि स्त्रियां सिर पर रुमाल बांधती है,किंतु किन्नरियां अपने पुरुषों की भांति टोपी लगाती हैं। जिसके तीन भाग में उठे कनपटे जाड़ों में नीचे गिरकर कनटोप का काम देते हैं।"8 वह हिमाचल की संस्कृति का अत्यंत मोहक रूप इस यात्रा वृत्तांत में प्रस्तुत करते हैं ।

अजय सोडाणी दर्रा दर्रा हिमालय नामक यात्रावृत्तांत में हिमालय की दुर्गम वादियों,वहां की सांस्कृतिक स्थलों,पर्यावरणीय समस्याओं एवं सौंदर्यमयी पर्वतों की गौरव गाथा का वर्णन करते हैं।"दर्रा दर्रा हिमालय पुस्तक अपनी राष्ट्रीय धरोहरों और प्रतीकों के प्रति अनुरक्ति वाले मानस की साहसिक यायावरी की गाथा तो कहती ही है साथ ही रोज-ब-रोज बढ़ती प्रदूषण की समस्या और पर्यावरण संरक्षण पर उसकी चिंता से भी रू-ब-रू कराती है।9 अजय सोडानी इस यात्रावृत्तांत में गंगा के उद्गम गंगोत्री से केदारनाथ, बद्रीनाथ, बद्रीविशाल आदि हिंदू धर्म के सबसे पवित्र एवं प्राचीन तीर्थ मार्ग का अन्वेषण करते हैं। केदार ताल ल के अप्रतिम सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं।" बहुत ही सुंदर स्थान है। मानो स्वर्ग का कोई टुकड़ा टूट कर जमीन पर आ गया हो। नील जल से भरा ताल और उसके आसपास असंख्य फूल तथा जड़ी बूटियां, पर...s...s।"10 पर वे बताते हैं अब ताल की वह सुंदरता नहीं रही वह

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

सूख रहा है। इस यात्रा के दौरान लेखक बर्फीले शिखरों एवं जानलेवा वादियों में भी स्थानीय गाइड एवं स्थानीय निवासियों के अदम्य जिजीविषा का वर्णन करता है। "यात्रा में संकट कम नहीं है। भूकंप आता है, ग्लेशियर दरक उठते हैं। कई बार तो स्थानीय सहयोगी भी हताश हो जाते हैं और इसके लिए लेखक की नास्तिकता को दोष देते हैं फिर भी यह यात्रा न केवल स्थानीय जनजीवन के कई दुर्लभ चित्र सामने लाती है, बल्कि हजारों फीट ऊंचाई पर खिलने वाले ब्रह्मकमल ,नीलकमल और फेन कमल जैसे दुर्लभ फूलों के भी साक्षात दर्शन करा देती है।"11 लेखक अंधाधुंध मानवीय हस्तक्षेप एवं अनियंत्रित रूप से बढ़ रहे व्यवसायीकरण के कारण पर्वतीय संस्कृति के मूल स्वरूप के नष्ट होने की तरफ पाठकों को आगाह किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यात्रा वृत्तांत के माध्यम से हम सिर्फ पर्वतीय सौंदर्य, संस्कृति, बोलचाल, पहनावें एवं भाषा का ही ज्ञान प्राप्त नहीं करते वरन पर्वतीय रोजमर्रा की समस्याओं एवं सामाजिक विद्रूपताओं से भी लेखक हमें परिचय कराता है।

निष्कर्ष-

यात्रावृत्तांत पर्वतीय अंचल के सौंदर्य, संस्कृति, मानवीय संवेदना एवं सामाजिक यथार्थ को समझने का एक अत्यंत प्रमाणिक दस्तावेज है। यात्रावृत्तांत लेखकों ने महज हमें सौंदर्य का ही दर्शन नहीं कराया वरन् वहां के समाज के साथ तादात्म्य में स्थापित करके आंतरिक लोक जीवन को शब्दों में पिरोया है। पर्वतीय जनजीवन एवं संस्कृति को समग्रता में समझने में हिंदी यात्रा साहित्य अत्यंत प्रमाणित दस्तावेज है। हिंदी यात्रावृत्तांतों में वर्णित पर्वतीय अंचल के दुर्गम जीवन के बीच भी पर्वतीय समाज की देवों में आस्था, सामूहिक उत्सव, वसुधैव कुटुंबकम का वर्णन यह सीख देती है कि न्यूनतम संसाधनों में भी सादगी एवं सामूहिक उल्लासपूर्ण जीवन जिया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1-दूर दुर्गम दुरुस्त, उमेश पंत, राजकमल प्रकाशन,2023,दूसरा संस्करण,पृष्ठ -66,67
2-झारखंड से लद्दाख,रश्मि शर्मा, नमस्कार बुक्स, 2023,पृष्ठ- 114
3-वही, पृष्ठ -120
4-सूर्य का जलावतरण, सतीश जायसवाल, राजकमल प्रकाशन, 2024, पृष्ठ-मुख्य पृष्ठ
5-वही, पृष्ठ -14
6-बादलों में बारूद, मधु कांकरिया, किताब घर प्रकाशन,2014,पृष्ठ -139
7-वह भी कोई देश है महाराज, अनिल यादव, अंतिका प्रकाशन प्रा. लि., 2018, पृष्ठ-41
8-किन्नर देश में, राहुल सांकृत्यायन, इंडिया पब्लिशर्स,333 मोहतशिमगंज,प्रयाग, पृष्ठ -39
9-दर्रा दर्रा हिमालय, अजय सोडानी, राजकमल प्रकाशन,2024, पृष्ठ- मुख्य पृष्ठ
10-वही, पृष्ठ- 94
11-दरकते हिमालय पर दर-ब-दर, अजय सोडानी,राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ -मुख्य पृष्ठ